

॥ १४ ॥ १५ ॥ १६ ॥ १७ ॥ अथःसंक्षेपेसतीतिशेषः हीनलक्ष्मीकेदित्यर्थः ॥ १८ ॥ समाःसंवत्सरान् ॥ १९ ॥ २० ॥ २१ ॥ २२ ॥ २३ ॥ इत्यारण्यकेपर्वणिनैलकंठीयेष्वा० सप्तषष्ठ्यधिक  
 द्विशततमोऽध्यायः ॥ २४ ७ ॥ २५ ७ ॥ २६ ७ ॥ २७ ७ ॥ २८ ७ ॥ २९ ७ ॥ ३० ७ ॥ ३१ ७ ॥ ३२ ७ ॥ ३३ ७ ॥ ३४ ७ ॥ ३५ ७ ॥ ३६ ७ ॥ ३७ ७ ॥ ३८ ७ ॥ ३९ ७ ॥ ४० ७ ॥ ४१ ७ ॥ ४२ ७ ॥ ४३ ७ ॥ ४४ ७ ॥ ४५ ७ ॥ ४६ ७ ॥ ४७ ७ ॥ ४८ ७ ॥ ४९ ७ ॥ ५० ७ ॥ ५१ ७ ॥ ५२ ७ ॥ ५३ ७ ॥ ५४ ७ ॥ ५५ ७ ॥ ५६ ७ ॥ ५७ ७ ॥ ५८ ७ ॥ ५९ ७ ॥ ६० ७ ॥ ६१ ७ ॥ ६२ ७ ॥ ६३ ७ ॥ ६४ ७ ॥ ६५ ७ ॥ ६६ ७ ॥ ६७ ७ ॥ ६८ ७ ॥ ६९ ७ ॥ ७० ७ ॥ ७१ ७ ॥ ७२ ७ ॥ ७३ ७ ॥ ७४ ७ ॥ ७५ ७ ॥ ७६ ७ ॥ ७७ ७ ॥ ७८ ७ ॥ ७९ ७ ॥ ८० ७ ॥ ८१ ७ ॥ ८२ ७ ॥ ८३ ७ ॥ ८४ ७ ॥ ८५ ७ ॥ ८६ ७ ॥ ८७ ७ ॥ ८८ ७ ॥ ८९ ७ ॥ ९० ७ ॥ ९१ ७ ॥ ९२ ७ ॥ ९३ ७ ॥ ९४ ७ ॥ ९५ ७ ॥ ९६ ७ ॥ ९७ ७ ॥ ९८ ७ ॥ ९९ ७ ॥ १०० ७ ॥  
 एणेयान्पृषतान्यंकूनहरिणानशरभानशशान् ॥ ऋक्षानरुहन्शंवरंश्रगवयांश्रमृगान्वहून् ॥ १४ ॥ वराहान्महिषांश्रैवयाश्रान्यामृगजातयः ॥ प्रदास्यतिस्व  
 यंतुभ्यंकुंतीपुत्रोयुधिष्ठिरः ॥ १५ ॥ जयद्रथउवाच कुशलंप्रातराशस्यसर्वमेदित्सितंत्वया ॥ एहिमेरथमारोहसुखमाप्नुहि केवलं ॥ १६ ॥ गतश्रीकान्ततराज्या  
 न्कृपणान्गतचेतसः ॥ अरण्यवासिनःपार्थान्नानुरोधुंत्वमर्हसि ॥ १७ ॥ नैवप्राज्ञागतश्रीकंभर्तारमुपयुजते ॥ युंजानमनुयुजीतनश्रियःसंक्षेपवसेत् ॥ १८ ॥  
 श्रियाविहीनाराष्ट्राच्चविनष्टाःशाश्वतीःसमाः ॥ अलंतेपांडुपुत्राणांभक्त्याक्लिशमुपासितुं ॥ १९ ॥ भार्यमिभवसुश्रूणित्यजैनानसुखमाप्नुहि ॥ अखिलानसिंधु  
 सौवीरानाप्नुहि त्वंमयासह ॥ २० ॥ वैशंपायनउवाच इत्युक्तसिंधुराजेनवाक्यंहृदयंकपनं ॥ कृष्णातस्मादपाकामदेशात्सश्रुकुटीमुखी ॥ २१ ॥ अव  
 मत्यास्यतद्वाक्यमाक्षिप्यचतुमध्यमा ॥ मैवमित्यब्रवीत्कृष्णालज्जस्वेतिचसैधवं ॥ २२ ॥ साकांक्षमाणाभर्तृणामुपयातमनिदिता ॥ विलोभयामासपरंवाक्ये  
 वाक्यानिपुंजती ॥ २३ ॥ इतिश्रीमहाभारतेआरण्यकेपर्वणिद्रौपदीहरणप० जयद्रथद्रौपदीसंवादेसप्तषष्ठ्यधिकद्विशततमोऽध्यायः ॥ २४ ७ ॥ २५ ७ ॥ २६ ७ ॥ २७ ७ ॥ २८ ७ ॥ २९ ७ ॥ ३० ७ ॥ ३१ ७ ॥ ३२ ७ ॥ ३३ ७ ॥ ३४ ७ ॥ ३५ ७ ॥ ३६ ७ ॥ ३७ ७ ॥ ३८ ७ ॥ ३९ ७ ॥ ४० ७ ॥ ४१ ७ ॥ ४२ ७ ॥ ४३ ७ ॥ ४४ ७ ॥ ४५ ७ ॥ ४६ ७ ॥ ४७ ७ ॥ ४८ ७ ॥ ४९ ७ ॥ ५० ७ ॥ ५१ ७ ॥ ५२ ७ ॥ ५३ ७ ॥ ५४ ७ ॥ ५५ ७ ॥ ५६ ७ ॥ ५७ ७ ॥ ५८ ७ ॥ ५९ ७ ॥ ६० ७ ॥ ६१ ७ ॥ ६२ ७ ॥ ६३ ७ ॥ ६४ ७ ॥ ६५ ७ ॥ ६६ ७ ॥ ६७ ७ ॥ ६८ ७ ॥ ६९ ७ ॥ ७० ७ ॥ ७१ ७ ॥ ७२ ७ ॥ ७३ ७ ॥ ७४ ७ ॥ ७५ ७ ॥ ७६ ७ ॥ ७७ ७ ॥ ७८ ७ ॥ ७९ ७ ॥ ८० ७ ॥ ८१ ७ ॥ ८२ ७ ॥ ८३ ७ ॥ ८४ ७ ॥ ८५ ७ ॥ ८६ ७ ॥ ८७ ७ ॥ ८८ ७ ॥ ८९ ७ ॥ ९० ७ ॥ ९१ ७ ॥ ९२ ७ ॥ ९३ ७ ॥ ९४ ७ ॥ ९५ ७ ॥ ९६ ७ ॥ ९७ ७ ॥ ९८ ७ ॥ ९९ ७ ॥ १०० ७ ॥  
 विषान्महारथानभिब्रुवन्मूढनलज्जसेकथं ॥ महेन्द्रकल्यान्निरतान्स्वकर्मसुस्थितान्समूहेष्वपियक्षरक्षसां ॥ २ ॥ नकिंचिदीज्यं प्रवदंतिपापं वनेचरं वागृहमेधि  
 नंवा ॥ तपस्विनंसंपरिपूर्णविधंभषंतिहवंश्वनराःसुवीर ॥ ३ ॥ अहंतुमन्यतवनास्तिकश्चिदेतादृशेक्षत्रियसंनिवेशे ॥ यस्त्वघपातालमुखेपतंतपाणौगृहीत्वाप्र  
 तिसंहरेत् ॥ ४ ॥ नागंप्रभिन्नगिरिकूटकल्पमुपत्यकाहमवतीचरंतं ॥ दंडीवयूथादपसेधसित्वंयेजेतुमाशंससिधमंराजं ॥ ५ ॥ बाल्यात्प्रसुप्तस्यमहाबलस्य  
 सिंहस्यपक्ष्माणिमुखाहुनासि ॥ पदासमाहत्यपलायमानःक्रुद्धंयदाद्रक्ष्यसिभीमसेनं ॥ ६ ॥  
 र्यफूत्कारकृत्वा ॥ १ ॥ अभिअभिकम्यब्रुवन् स्थितान्अचलान् यक्षादिभिरप्यजेयानित्यर्थः ॥ २ ॥ ईदृङ्स्तुल्यं वनेचरं वानप्रस्थं पापं पापवचनं प्रवदंति संतत इति शेषः श्वनराः शुनकतुल्यानरास्त्वादृशास्तु  
 एवं उक्तरित्याश्रयंति ब्रुवन्ति ॥ ३ ॥ क्षत्रियसंनिवेशे च पसमाजे पातालमुखे महागते प्रति संहरेत् प्रतिषेधेत् ॥ ४ ॥ उपत्यकां अद्रि समीप भूमिं दंडी दंडमात्रा युधौ यात्समूहात् अपसेधसि अपकर्षसि ॥ ५ ॥ बा  
 ल्यात् मौढ्यात् पक्ष्माणि मुखोपरि स्थिकेशान् पदासमाहत्य लुनासि छिनत्ति ॥ ६ ॥